इतिहास विभाग की प्रदर्शनी
कला, परंपरा और इतिहास

आज दिनांक 30 नवंबर 2023 को राजकीय महाविद्यालय ठियोग में इतिहास विभाग के विद्यार्थियों द्वारा अत्यंत ही ज्ञानवर्धक व रोचक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका शीर्षक था→ **कला, परंपरा और इतिहास**। जोकि हमारी संपूर्ण भारतीय संस्कृति का द्योतक (प्रतीक) है। प्रदर्शनी का आरंभ पूर्वाह्न 11:30 पर इतिहास विषय के आचार्य प्रतिबिंद पांडेय और छात्र-छात्राओं द्वारा महाविद्यालय की प्रचार्या डॉ० ललिता चंदन, उप-प्रचार्या डॉ० अनीता राठौर चौहान, वरिष्ठ आचार्य गण डॉ० राकेश शर्मा, डॉ० विनय मोहन शर्मा व अन्य आचार्य गणों के स्वागत से होता है। प्रदर्शनी के सीधे प्रसारण के लिए प्रैस विभाग के दो सदस्य भी उपस्थित थे। प्रदर्शनी की शुरुआत महाविद्यालय में अध्ययनरत इतिहास विषय के विद्यार्थियों द्वारा प्राचीन कलाकृतियों के प्रदर्शन से होती है। जिनमें सर्वप्रथम मिट्टी से बने मृदभांड गेलवी (आल्टू, केतली) और कस्सा तथा पारू दिखाया जाता है। जिसका प्रयोग हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन में प्राचीन काल या पाषाण काल से ही किया जा रहा है। ये हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति तथा परंपरा के विकास को भी दर्शाते हैं कि किस तरह से ये परंपराएं या प्रथाएं बिना किसी परिवर्तन के पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी चली आ रही है। जोकि हमारी सांस्कृतिक एकता, समन्वयवादिता व सार्वभौमिकता का भी प्रतीक है। ये हमारी कला के विकास को प्रदर्शित करने का भी एक माध्यम है कि किस प्रकार से मानव ने अपने आरंभिक जीवन में मिट्टी का प्रयोग करके इतने मजबूत, सुंदर तथा शिल्प निपुण वस्तुओं का निर्माण किया है। ये मानव के सांस्कृतिक, बौद्धिक व वैज्ञानिक विकास के पथ पर अग्रेषित होने का भी एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इसी कड़ी को आगे की तरफ अग्रसरित करते हुए संस्कृति व कला के वाहक के रूप में विभिन्न धातुओं से निर्मित (लोहा, तांबा, कांसा, चांदी, पीतल) वस्तुओं को भी प्रदर्शित किया जाता है। तांबे से निर्मित वस्तुओं में थाली (मगाई), गिलास, कड़छी, लोटा, डिकची, बट्टू, शनेंशी (चिमटा), कस्सा, केतली आदि प्रमुख थी। लोहे की वस्तुओं में ताला (जादा) कुंजी (चाबी), ओड़ला (पाथा), चालना (छलनी), सूपा, ताल व माप के लिए प्रचलित प्राचीन बाट 1 सेर (आज सवा किलो) शामिल थे। शुद्ध चांदी से निर्मित पात्रों में घुला थाल, नारियल, लोटा, सुपारी, पान का पत्ता, थाली, गिलास, लोटा, नवजात शिशु के अन्नप्राशन संस्कार पर प्रयुक्त होने वाला बर्तन व अन्य अनेक वस्तुएं शामिल थी। कांसा, पीतल व मिश्रित धातु से बनी वस्तुओं में डिकची (पुराना पतीला), थाली, गिलास, लोटा, कड़छी चिलम, हुक्का, कली, कस्सा (मुतन्ना फारसी), पटलोई मुख्य रूप से थे। इससे सर्वप्रथम तो मानव सभ्यता और संस्कृति के प्रगति पर अग्रसर होने का ज्ञान मिलता कि मानव ने मृदभांडों के साथ ही धातुओं का प्रयोग भी अपने दैनिक जीवन में आरंभ कर दिया था। प्रारंभ में मानव को केवल तांबे का ज्ञान था किंतु समय के साथ साथ

Scanned with OKEN Scanner

उसने अन्य धातुओं के उपयोग की तकनीक का भी विकास किया। इसी के साथ ये हमारे इतिहास जानने के भी महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत हैं। इन वस्तुओं पर की गई चित्रकारी, नक्काशी व शिल्प से हमें मानव की बौद्धिक, तकनीकी व वैज्ञानिक क्षमता का भी बोध होता है। मानव की आर्थिक समृद्धि व अर्थव्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी ये हमारे महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। प्रारंभ में मानव ने केवल तांबे, लोहे, कांसे व मिश्रित धातुओं का प्रयोग किया और सभ्यता के विकास के साथ ही उसने सोना व चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं का प्रयोग करना शुरू किया जोकि उसकी आर्थिक प्रगति और अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण का स्पष्ट उदाहरण है।

प्रदर्शनी में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, प्रमाणिक व विश्वसनीय पुरातात्विक स्रोत सिक्के भी कला स्नातक तृतीय वर्ष के छात्र साहिल कैथला व उसके सहभागियों द्वारा प्रदर्शित किए गए। जोकि संपूर्ण प्रदर्शनी का सर्वाधिक प्रमुख भाग थे। सिक्कों में सबसे पुरातन सिक्के 17 वीं शताब्दी के राम-सीता दरबार के टोकन के रूप में उपलब्ध थे। इन राम-सीता दरबार के टोकनों का प्रचलन करने का उद्देश्य संपूर्ण भारतवर्ष में राम-राज्य के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना था। अकबर के काल में ये सिक्के (टोकन) विशेष रूप से चलाए गए थे और संपूर्ण भारत के राम मंदिरों में तीर्थ यात्रियों को एक यादगार भेंट के रूप में दिए जाते थे ताकि लोग राम-सीता के आदर्शों का अपने जीवन में पालन करें। इसी के साथ हमें 1804 ई० महाराजा रणजीत सिंह के शासन काल के नानक शाही रुपये भी प्राप्त हुए थे। 1750 ई० में राम-सीता दरबार के टोकनों का व्यापक प्रचलन देखने को मिलता है। ब्रिटिश काल के सिक्कों में जार्ज V, जार्ज VI के सिक्के, तांबे, सिल्वर व मिश्रित धातु के सिक्के प्राप्त हुए हैं। स्वतंत्रोत्तर युग के जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा आदि की स्मृतियों के सिक्के, 2 आना, 4, 8 आना, 5, 10, 20, 25, 50 पैसे व विभिन्न धार्मिक स्थलों के टोकन मिलते हैं। जोकि भारतीय इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं।

प्रदर्शनी में प्राचीन वेशभूषा (पहनावा), आभूषण व औषधीय महत्व के पौधों का भी विस्तृत वर्णन किया गया। प्राचीन वेशभूषा में ठियोग, शिमला के स्थानीय प्राचीन पहनावे लोईया (ऊन से निर्मित), ऊनी कोट, सदरी, दाढ़, दोढ़ व रेजटे के अतिरिक्त किन्नौरी वेशभूषा को विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया। जिनमें किन्नौरी लिंग्चा सर्वाधिक प्रसिद्ध था। यह मूल रूप से ऊन का बना हुआ जिस पर अत्यंत सुंदर व बारीक नक्काशी की गई थी। इसकी नक्काशी बौद्ध धर्म से प्रभावित अत्यंत मनमोहक, रोचक, निपुण व साफ-सुथरी थी। किन्नौरी चोली जोकि महिलाओं का प्रमुख पहनावा है यह मखमल से निर्मित अत्यंत सुंदर, आकर्षक व मनमोहक थी। आभूषणों में चांदी का बाजूबंद, चांदी की पुरानी किलप, रानी हार, बालियां, कांटे (सल्जे) व दराढ़ विशेष थे। ये शिल्प कला के उत्कृष्ट रूप को प्रदर्शित करते थे। स्थानीय स्तर पर आभूषणों में दराढ़ विशेष महत्त्व रखते हैं जो वहाँ की देव संस्कृति की भी झलक प्रदान करते हैं। इन्हें विशेष रूप से देव उत्सवों में

देव संरक्षकों व स्थानीय लोगों द्वारा पहना जाता था। देव संस्कृति से जुड़ा हमारे पास एक माट (मिट्टी का एक विशेष बर्तन) भी उपलब्ध था जोकि हमारी धार्मिक संस्कृति का अमूल्य रत्न है। औषधियों में जायफल, कस्तूरी की गोलियाँ, पिनली, हड़ा, मुलेठी, गिलोय, नीलकंठी, तुलसी हमारे पास अलब्ध थी। जिनमें तुलसी, नीलकंठी, छांवर, गिलोय व पिनली स्थानीय क्षेत्रों में प्राचीन काल से पाई जाती है। इनका प्रयोग वात, कफ, पित, खांसी, बुखार, श्वसन संबंधी रोगों व चोट के उपचार सहित अनेक बीमारियों के निवारण में किया जाता है। पिनली का प्रयोग विशेष रूप से नवजात शिशुओं के शारीरिक स्वास्थ्य व इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए किया जाता है।

विद्यार्थियों के द्वारा तकली (ताकलू), ऊन व कंडला (ऊन रखने का पात्र) भी विशेष रूप से दिखाए गए थे। जो यहां की परंपराओं में अत्यंत प्राचीन है। तकली का प्रयोग ऊन को कातने के लिए किया जाता था और ये लकड़ी तथा भेड़ के सींगों से निर्मित होती थी। ऊन का प्रयोग पहाड़ी क्षेत्रों में वस्त्र निर्माण और विशेष रूप में सर्दियों में ठंड से बचाव के लिए किया जाता था। लकड़ी से निर्मित वस्तुओं में कोठड़ी (संदूक), गुल्लक, हुक्का (कल्ली), धुम्रदंडिका, कैथ, डोऊर (लकड़ी का बड़ा चम्मच) शामिल थे। जोकि स्थानीय पहाड़ी संस्कृति की झलक पेश करते हैं। इन पर अत्यंत बारीक व सुंदर नक्काशी तथा पत्तियों के डिजाइन उकेरे गए थे। ये वस्तुएं शिल्पकला का एक उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करती हैं।

खाद्य पदार्थों में विद्यार्थियों के द्वारा स्थानीय व्यंजनों का विशेष रूप से एक अलग स्टॉल लगाया गया था। जिसमें यहां के प्राचीन स्थानीय व्यंजनों सिड्डू (सिड्कु), पटांडे, चिलड़े (लौटे), घिंघड़े (पतरोड़े), चटनी, कीडे (मक्की के आटे से निर्मित), कड़ोई (मक्की की रोटी) दिखाई गई थी। इन व्यंजनों के अतिरिक्त सूखे अनाज में कोदा, बाथु, बंजीरी, सोयाबीन, मक्की (कुकड़ी) अखरोट (खोड़), लांबू (अरबी कचालू के पत्ते), मक्खन (चोपड़), छाछ (लस्सी), घी को प्रदर्शित किया गया था।

प्रदर्शनी में कुछ वस्तुओं को चित्रों के माध्यम से भी दर्शाया गया था जिनमें फाशणी (मथनी), चलटा (चावल व सिड्डू बनाने के लिए प्रयुक्त बर्तन, रेयांद (कपड़े धोने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का एक बर्तन), पटलोई (पानी के लिए प्रयुक्त मटका (पीतल)), कनाली (आटा गूंथने का बर्तन), लालटेन गैस, विभिन्न प्रकार के आभूषण शामिल थे। विद्यार्थियों द्वारा गांदा (झाड़ू) जोकि चील के वृक्ष की पत्तियों से बनाया जाता था और प्राचीन समय से अब तक घरों की साफ-सफाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

इसी के साथ विद्यार्थियों द्वारा ठियोग रियासत के इतिहास पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया। ठियोग रियासत के संस्थापक जयचंद जोकि मूल रूप से राजस्थान के निवासी थे ने ठियोग रियासत की स्थापना 1661 ई० में की थी। किशन चन्द यहां के अंतिम शासक थे। ठियोग रियासत पहली ऐसी रियासत थी जिसने भारत में विलय की घोषणा की थी। माना

Scanned with OKEN Scanner

जाता है कि ठियोग रियासत पहली ऐसी रियासत थी जिससे ब्रिटिश शासन से सर्वप्रथम स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। श्री सूरत राम प्रकाश को सर्वप्रथम 16 अगस्त को यहाँ का प्रधानमंत्री चुना गया था। इसके पश्चात ही ठियोग में स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष 16 अगस्त को मनाया जाता है।

महाविद्यालय के अधीक्षक श्री संदीप भारद्वाज जी के द्वारा भी स्थानीय इतिहास विशेषकर पराला (सैंज) व वहाँ के शासक राणा पद्म सिंह के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। सैंज का राजमहल 350 वर्ष पुराना है तथा यहां के शासक राणा पद्म सिंह द्वारा की गई खुदाई में उन्हें एक स्वयंभू शिवलिंग प्राप्त हुआ। इस शिवलिंग को भूमि से बाहर निकालने के लिए लगभग 15 फीट गहरी खुदाई की गई परन्तु इसका आकार निरंतर बढ़ता चला गया जिस कारण उसी स्थान पर इस शिवलिंग की स्थापना कर दी गई। खुदाई में दुर्गा, गणपति व विष्णु की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। इसके साथ ही उन्होंने विभिन्न प्राचीन वस्तुओं के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान कर ज्ञान्वित भी किया।

प्रदर्शनी के अंतिम चरण में प्रदर्शनी के शीर्षक कला, परंपरा और इतिहास पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया। कला और परंपराएँ हमारी प्राचीन संस्कृति व इतिहास के मूल आधार हैं। हमारी सभ्यता और संस्कृति की वाहिकाएँ हैं। मनुष्य के विचारों, भावों, संस्कारों की संपूर्ण अभिव्यक्ति का यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन है। संस्कृति हमारे जीवन जीने की कला है। किसी राष्ट्र, समुदाय, वर्ग, जाति व समाज की एकता, अखंडता, बंधुता, संप्रभुता व पहचान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति तो विश्व की प्राचीनतम व महान संस्कृति है जो 'अहिंसा परमो धर्मः' 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसे महान आदर्शों पर आधारित है। मानव के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, तकनीकी व वैज्ञानिक विकास के अध्ययन को ही इतिहास की संज्ञा दी जाती है। इतिहास का संपूर्ण अध्ययन कला, परंपराओं, रीतियों व संस्कृति के माध्यम से ही संपन्न है। जिसका पूर्ण विवरण प्रदर्शनी में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसी के प्रदर्शनी का समापन होता है और यह प्रदर्शनी संपूर्ण अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय संस्कृति कला, परंपरा और इतिहास की जानकारी प्रदान करने का एक उत्कृष्ट व विश्वसनीय माध्यम थी। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात प्राचार्य डा॰ ललिता चंदन ने विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना की तथा भारतीय संस्कृति के महत्व को बताया तथा उसका सुरक्षित रखने पर बल दिया।

Prakhand Pandey
A.P. (HISTORY)
G.C. Theog.

Principal
Govt. Degree College,



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner



Scanned with OKEN Scanner